कृषि विज्ञान केन्द्र
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)
ई–न्यूज लेटर
अगस्त 2026, अंक: 28

मूंग, मोठ एवं ग्वार की उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 29 जून से 2 जुलाई 2026 को मूंग, मोठ एवं ग्वार की उन्नत उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। ।प्रशिक्षण में श्री हरीश कुमार रछोया (विषय विशेषज्ञ, सस्य विज्ञान) द्वारा मूंग, मोठ एवं ग्वार की वैज्ञानिक उत्पादन तकनीकों पर किसानों को प्रशिक्षित किया गया। किसानों को उन्नत किस्मों का चयन, बीज गुणवत्ता एवं बीजोपचार, उचित बुवाई समय एवं बीज दर, कतार दूरी, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, सिंचाई एवं खरपतवार प्रबंधन तथा समेकित कीट एवं रोग प्रबंधन की वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग के लिए सक्षम किया गया। साथ ही विभिन्न वृद्धि अवस्थाओं पर आवश्यक कृषि क्रियाओं एवं उत्पादकता बढ़ाने वाली तकनीकों को अपनाने हेतु किसानों को प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण को अधिक व्यावहारिक एवं अनुभवात्मक बनाने के लिए किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र की विभिन्न इकाइयों का अवलोकन करवाया गया। किसानों ने अजोला इकाई में अजोला उत्पादन एवं पशु आहार में इसकी उपयोगिता, दाल मिल इकाई में दलहन के प्राथमिक प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, प्राकृतिक खेती इकाई में प्राकृतिक कृषि आधारित संसाधन प्रबंधन, केंचुआ उत्पादन इकाई में वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, क्रॉप म्यूजियम में विभिन्न फसलों एवं कृषि तकनीकों तथा नर्सरी इकाई में पौध उत्पादन एवं रोपण सामग्री तैयार करने की प्रक्रियाओं का अवलोकन किया।

प्रशिक्षण के उपरांत सरदारशहर एवं रतनगढ़ तहसील के तीन गांवों में मूंग की (MH-1142) किस्म के प्रदर्शन 45 हैक्टेयर में, मोठ की (RMO-2251) किस्म के प्रदर्शन 10 हैक्टेयर में तथा ग्वार की (RGR-20-1) किस्म के क्लस्टर प्रदर्शन 20 हैक्टेयर में क्षेत्र में लगवाए गए।इन प्रदर्शनों के माध्यम से किसानों को उन्नत किस्मों की अनुशंसित फसल प्रबंधन तकनीकों का प्रत्यक्ष प्रयोग कराया गया।

पोषण वाटिका की स्थापना पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 10 जुलाई 2026 को तहसील रतनगढ़ के ग्राम देवीपुरा में "घरेलू पोषण सुरक्षा के लिए पोषक वाटिका की स्थापना" विषय पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. रमन जोधा, विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) द्वारा सब्जियों की बेहतर वृद्धि एवं उत्पादन के लिए जैविक खाद एवं जैविक उर्वरकों के उचित प्रयोग, मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्धता बनाए रखने,

सिंचाई, निराई-गुड़ाई, खरपतवार नियंत्रण तथा पौधों की नियमित देखभाल के संबंध में प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान खरीफ मौसम में लगाई जाने वाली पोषक सब्जियों जैसे लौकी, चवला, तुरई, भिंडी ,धनिया आदि के बीज उपलब्ध करवाए गए। इसके अतिरिक्त घरेलू पोषक वाटिका में नींबू, आंवला, अनार, सहजन, मीठा नीम, करौंदा ,बेर आदि फलदार एवं उपयोगी पौधों की स्थापना तथा उनके उचित प्रबंधन के संबंध में जानकारी देते हुए पौधों के चयन, रोपण का उचित समय, दूरी, सिंचाई, पोषण एवं देखभाल की जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण के अंतर्गत 50 प्रदर्शनों के माध्यम से पोषक वाटिका की स्थापना एवं विभिन्न सब्जियों तथा उपयोगी पौधों के उत्पादन की तकनीक को प्रदर्शित किया गया।

गाय एवं भैंसों में नस्ल सुधार एवं प्रबंधन तकनीकों पर प्रशिक्षण आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 20 एवं 21 जुलाई 2026 को "गाय एवं भैंसों में नस्ल सुधार एवं प्रबंधन पद्धतियां विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के दौरान श्री श्याम बिहारी, पशुपालन विशेषज्ञ द्वारा प्रतिभागियों को वैज्ञानिक पशुपालन एवं प्रबंधन तकनीकों के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को गाय एवं भैंसों की उन्नत नस्लों का चयन, नस्ल सुधार का महत्व, पशुओं की प्रजनन क्षमता में सुधार, पशु चयन के आधार, प्रजनन प्रबंधन एवं कृत्रिम गर्भाधान से संबंधित तकनीकी जानकारी देकर प्रशिक्षित किया गया। साथ ही टीकाकरण, कृमिनाशन, पशु आवास की स्वच्छता, रोगों की प्रारंभिक पहचान, नियमित स्वास्थ्य निगरानी , हीट की पहचान, उचित समय पर गर्भाधान, गर्भावस्था के दौरान पशु प्रबंधन तथा ब्यांत के पूर्व एवं पश्चात देखभाल से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रशिक्षण दिया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र की डेयरी इकाई में प्रतिभागियों को पशुओं के आवास, चारा एवं आहार प्रबंधन, स्वच्छता व्यवस्था, दुग्ध उत्पादन, पशुओं की दैनिक देखभाल तथा वैज्ञानिक डेयरी प्रबंधन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का प्रायोगिक प्रदर्शन एवं अवलोकन करवाया गया। प्रतिभागियों को डेयरी इकाई में अपनाई जा रही व्यवस्थाओं एवं तकनीकों के संबंध में प्रशिक्षित किया गया तथा विभिन्न बिंदुओं पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया गया।

खरीफ़ की फ़सलों के लिए सीड-कम-फ़र्टिलाइज़र मशीन का कैलिब्रेशन, संचालन और उपयोग पर प्रशिक्षण आयोजित

दिनांक 22 से 23 जुलाई 2026 को कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा "खरीफ़ की फ़सलों के लिए सीड-कम-फ़र्टिलाइज़र ड्रिल मशीन का कैलिब्रेशन, संचालन और उपयोग" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में 20 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों को सीड-कम- फ़र्टिलाइज़र ड्रिल मशीनों के सही कैलिब्रेशन, संचालन एवं प्रायोगिक प्रयोग के संबंध में प्रशिक्षित कर उनकी दक्षता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि करना था।

प्रशिक्षण के दौरान कृषि अभियांत्रिकी विषय विशेषज्ञ डॉ. प्रवीन द्वारा किसानों को खरीफ फसलों में बीज व उर्वरकों के संतुलित एवं उचित मात्रा में प्रयोग के लिए मशीनों के कैलिब्रेशन की आवश्यकता एवं उपयोगिता के बारे में जानकारी दी गयी । साथ ही, प्रतिभागियों को बीज व उर्वरक मशीन की कार्यप्रणाली, कैलिब्रेशन की विधि, उर्वरक की मात्रा निर्धारित करना, मशीन का उचित संचालन तथा खेत में समान रूप से उर्वरक के प्रयोग के संबंध में प्रशिक्षित किया गया। प्रतिभागियों को प्रायोगिक अभ्यास के माध्यम से कृषि यंत्रों के सुरक्षित एवं कुशल संचालन में दक्षता प्रदान की गई एवं विभिन्न खरीफ फसलों में मशीनों के प्रायोगिक प्रयोग एवं संचालन का अभ्यास भी करवाया गया, जिससे वे स्वयं मशीनों का सही ढंग से कैलिब्रेशन एवं संचालन करने में सक्षम बन सकें।

कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 27 एवं 28 जुलाई 2026 को कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 25 किसानों एवं किसान महिलाओं ने सहभागिता की। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों के मध्य प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करते हुए खरीफ फसलों, बागवानी, पशुपालन, कृषि अभियांत्रिकी, मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण से संबंधित विभिन्न विषयों पर किसानों की समस्याओं, अनुभवों एवं आवश्यकताओं पर चर्चा करना था।

कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा किसानों के साथ प्रत्यक्ष संवाद, प्रश्नोत्तर एवं अनुभवों का आदान-प्रदान किया गया। डॉ. अजय कुमावत, उद्यान विशेषज्ञ ने किसानों के साथ पौधारोपण एवं सब्जी उत्पादन तकनीक से संबंधित विषयों पर संवाद किया। किसानों ने सब्जी उत्पादन में आने वाली विभिन्न समस्याओं, पौधों की वृद्धि एवं देखभाल से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। पौधों के उचित प्रबंधन, सिंचाई एवं उत्पादन को बेहतर बनाने के उपायों पर किसानों के साथ विचार-विमर्श किया गया। श्याम बिहारी, पशुपालन विशेषज्ञ ने किसानों के साथ पशुपालन एवं पशु प्रबंधन से संबंधित विषयों पर संवाद किया। किसानों ने पशुओं के आहार, स्वास्थ्य, देखभाल एवं पशुपालन में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं के बारे में अपने अनुभव साझा किए। किसानों द्वारा उठाए गए विभिन्न प्रश्नों एवं समस्याओं पर चर्चा करते हुए उचित प्रबंधन एवं बेहतर पशुपालन के संबंध में उपयोगी सुझाव दिए गए।

डॉ. प्रवीन, कृषि अभियांत्रिकी विशेषज्ञ ने किसानों के साथ कृषि कार्यों में उपयोग होने वाले विभिन्न कृषि यंत्रों एवं औजारों के उचित उपयोग, उपयोगिता एवं कृषि कार्यों को सरल बनाने में उनकी भूमिका पर चर्चा की। किसानों ने अपने खेतों में उपयोग किए जा रहे कृषि उपकरणों एवं कृषि कार्यों के दौरान आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों के बारे में जानकारी साझा की तथा उनके समाधान पर संवाद किया गया।डॉ. रमन जोधा, गृह विज्ञान विशेषज्ञ ने पोषण, संतुलित आहार एवं पोषाहार वाटिका (न्यूट्री गार्डन) से संबंधित विषयों पर संवाद किया। महिलाओं ने परिवार के खान-पान, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध खाद्य पदार्थों तथा पोषणयुक्त सब्जियों के उत्पादन एवं उपयोग से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। घर के आसपास उपलब्ध स्थान का उपयोग कर पोषाहार वाटिका स्थापित करने तथा परिवार के दैनिक आहार में विभिन्न पोषणयुक्त सब्जियों को शामिल करने के संबंध में भी विचार-विमर्श किया गया।

डॉ. विनोद कुमार सैनी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हैड ने किसानों के साथ मृदा स्वास्थ्य एवं मृदा उर्वरता बनाए रखने से संबंधित विषयों पर विस्तृत संवाद किया। किसानों ने अपने खेतों की मृदा की स्थिति, फसलों की उत्पादकता में आ रही समस्याओं तथा उर्वरकों के उपयोग से संबंधित अपने अनुभव बताये। इस दौरान मृदा परीक्षण के आधार पर पोषक तत्व प्रबंधन, संतुलित उर्वरक उपयोग, जैविक पदार्थों के समावेशन, मृदा में कार्बनिक पदार्थ बढ़ाने तथा मृदा स्वास्थ्य एवं उत्पादकता बनाए रखने के उपायों पर किसानों के साथ चर्चा

की गई।अनुभवी किसानों ने प्राकृतिक खेती (Natural Farming) अपनाने से संबंधित अपने अनुभव, अपनाई गई विधियों तथा प्राप्त परिणामों को अन्य किसानों के साथ साझा किया।

कृषि विज्ञान केंद्र की नर्सरी से कृषकों को 5,000 से अधिक पौधे वितरित

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा जिले में बागवानी एवं कृषि वानिकी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से खारे पानी एवं शुष्क क्षेत्र में अनुकूल रूप से विकसित होने वाले 5,000 से अधिक पौधे (विभिन्न प्रकार के फलदार, सजावटी, छायादार एवं बहुउपयोगी पौधे) कृषकों को उपलब्ध करवाए गए। पौध वितरण के साथ कृषकों को पौध रोपण, सिंचाई, पोषण, पौध संरक्षण एवं उचित देखभाल संबंधी तकनीकी जानकारी भी प्रदान की गई।इनमें विशेष रूप से खेजड़ी (किस्म -थार शोभा), बेर (किस्म -गोला), सहजन, चीकू, मौसमी, संतरा, नींबू, अनार, करौंदा, , मालाबार नीम, करंज एवं शीशम सहित अन्य पौधे शामिल हैं।

बेर बगीचा स्थापना हेतु उन्नत किस्म के प्रदर्शन

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा किसानों को बेर की उन्नत बागवानी तकनीक से अवगत कराने के उद्देश्य से तीन कृषकों के खेतों पर बेर की उन्नत किस्म 'गोला' के प्रदर्शन लगवाए गए ।प्रदर्शन के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के उद्यान एवं बागवानी विशेषज्ञ डॉ. अजय कुमावत ने बताया कि बेर की खेती के लिए उचित किस्म का चयन, स्वस्थ पौध सामग्री, सही रोपण , दूरी एवं संतुलित पोषण प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र में बेर की फसल किसानों के लिए एक लाभकारी फल फसल के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। साथ ही किसानों को बेर बगीचे की स्थापना एवं बाग प्रबंधन की विस्तृत जानकारी के साथ साथ पौधरोपण से पूर्व गड्ढे की खुदाई, गड्ढे में उचित मात्रा में खाद एवं मृदा मिश्रण भरने, पौधे से पौधे की उचित दूरी तथा पौधरोपण की विधि के बारे में प्रशिक्षण दिया गया।

संकलनकर्ता	संपादक		प्रकाशक
श्री हरीश कुमार रछोइया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) श्री श्याम बिहारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुपालन) डॉ अजय कुमावत, विषय वस्तु विशेषज्ञ (बागवानी) डॉ प्रवीन, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी)	डॉ रमन जोधा, विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान)		डॉ वी के सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर चुरु -1
	Designed	Sunil Kumar V V (Jr. Steno)	